मैं पंछी बन उड़ना चाहू,

दूर गगन मे मैं खो जाउ ॥

चंदा से कहु चाँदनी से मिलाओ,

मीठे मीठे मुझको सपने दिखाओ,

तारो संग मैं भी झिलमिलाउ,

मैं पंछी बन उड़ना चाहू,

दूर गगन मे मैं खो जाउ ॥

पवनो के झोके राग सुनाए,

ऊचे उँचें पर्वत मुझको बुलाए,

झरनो संग मैं भी गुनगुनाउ,

मैं पंछी बन उड़ना चाहू,

दूर गगन मे मैं खो जाउ ।।

सागर की लहरे शीश झुकाए,

बदरा घिर के प्यास बुझाए,

इंद्रधनुष सा रंग मैं पाउ ,

मैं पंछी बन उड़ना चाहू,

दूर गगन मे मैं खो जाउ ।।

मेरी खुशबू महके इन फ़िज़ाओ मे,

मेरा यश बिखरे चहु दिशाओ मे,

फूलो संग मैं भी मुस्कुराउ,

मैं पंछी बन उड़ना चाहू,

दूर गगन मे मैं खो जाउ ।।

Deepchandra Srivastava